स्वतंत्रोत्तर भारत के आर्थिक विकास में प्राचीन अवधारणाओं की प्रासंगिकता

अयाज करीम

राष्ट्र, क्षेत्र और व्यक्तियों की आर्थिक समृद्धि के वृद्धि को आर्थिक विकास कहते हैं। नीति निर्माण की दृष्टि से आर्थिक विकास उन सभी प्रयत्नों को कहते हैं जिनका लक्ष्य किसी जन समुदाय की आर्थिक स्थिति और जन–जीवन के सुधार के लिए अपनाये जाते हैं। वर्त्तमान युग की सबसे महत्वपूर्ण समस्या आर्थिक विकास की समस्या है। आर्थिक स्वतंत्रता के बिना राजनैतिक स्वतंत्रता का कोई महत्व या उपयोग नहीं है। विकास एवं उनसे जुड़े मुद्दों के इस महत्व के कारण ही अर्थशास्त्र के क्षेत्रमें ''विकास–अर्थशास्त्र'' नामक एक अलग विषय का ही उदय हो गया।

भारत में आर्थिक विकास सिंधुघाटी सभ्यता अर्थात् हड़प्पा सभ्यता से आरंभ माना जाता है। सिंधुघाटी सभ्यता की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से व्यापार पर आधारित प्रतीत होती है, जो यातायात में प्रगति के आधार पर समझी जा सकती है। लगभग 600 ई0 पू0 महाजनपदों मे विशेष रूप से चिन्हित सिक्कों को ढ़ालना आरंभ कर दिया था। इस समय को गहन व्यापारिक गतिविधि एवं नगरीय विकास के रूप में चिन्हित किया जाता है।